हिंसा से भयानक हिंसक-भावना...!

लोग कहते हैं- नाम में क्या रखा है! यह नाम ही काम तमाम कर सकता है, जैसे एसके शशिधरन की मलयालम फिल्म 'सेक्सी दुर्गा'। शशिधरन तो यह मानते हैं कि दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, माया या मीना की तरह सिर्फ नाम है, पर जब नवरात्रि में लोग, दुर्गा की आराधना कर रहे हों या उनकी श्रद्धा इस नाम से जुड़ी हो, तब यह नाम तकलीफदेह तो हो सकता है, इसीलिए युवा निर्देशक ने आठ से पंद्रह दिसंबर तक तिरुवनंतपुरम में होने वाले इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ केरल से इसे हटा लिया है। चूंकि, फिल्म को सूचना और प्रसारण मंत्रालय से भी स्क्रीनिंग सर्टिफिकेट नहीं मिला है, इसलिए अक्टूबर में होने वाले मुंबई फिल्म महोत्सव में भी प्रदर्शित नहीं किया जा सकेगा।

चेन्नई से गौतमन भास्करन

शशिधरन का कहना है कि उसने फिल्म को वापस इसलिए लिया कि इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ केरल की संस्था केरल चलचित्र अकादमी, जान-बूझ कर इसे हाशिए पर डाल रही थी। यह फिल्म पिछली फरवरी में रॉटरडम में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में हीवोस टाइगर अवार्ड जीत चुकी है। इसके अलावा भी यह फिल्म इनाम जीत चुकी है, इसलिए उन्हें फिल्म को 'मलयालम सिनेमा टुडे' वाली कैटेगरी में डालना पसंद नहीं आ रहा था।

इस कैटेगरी में इस फिल्म के साथ महेश नारायणन की 'टेक ऑफ', दिलीश पोथन की 'थोंडी मुथालुम', द्रक्शाशियम सलीम कुमार की 'करुथा जूठन' आदि फिल्में शामिल हैं। जूरी ने प्रतियोगी कैटेगरी के लिए प्रेमशंकर की 'एंड पेर' (दो लोग) और संजू सुरेंद्रन की 'ईडन' को मलयालम एंट्री के रूप में शामिल किया है। नाम के साथ होने वाली संभावित परेशानी को दरकिनार कर दिया जाए, तो कई लोगों का मानना है कि फिल्म देखने योग्य है। हॉलीवुड रिपोर्टर के. डेबरा यंग के मुताबिक शशिधरन मनोरंजक फिल्में बनाते हैं, जो दर्शकों को बांधे रखती हैं। उनकी पहली फीचर फिल्म 'ए ऑफ डे' में भी अंत वह था, जो अपेक्षित नहीं था। 'सेक्सी दुर्गा' में दिखाया गया है कि मनुष्य सदाशय हो सकता है, यदि वह चाहता है तो। फिल्म की शुरुआत में उत्तर भारतीय युवा महिला दुर्गा (राजश्री देशपांडे) आधी रात को तब तक इंतजार करती है, जब तक कबीर (कन्नन नायर) नहीं आता, फिर दोनों चेन्नई जाना चाहते हैं। घटनाओं की सीरिज चलती रहती है, जो लोगों को थाम सकती है। फिल्म में बताया गया है कि हिंसा की संभावना, वास्तविक हिंसा से ज्यादा भयानक होती है, विशेषकर महिलाओं के लिए।

कुछ हद तक यह संभावना शशिधरन को फिल्म समारोह से वापस लेने के लिए भी जिम्मेदार हो सकती है। केरल, देश में एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां संघ परिवार अपने लिए जगह तलाश रहा है। दुर्गा नाम ही उनके लिए फायदे का सौदा हो सकता था और कन्नूर, अलप्पी, तिरुवनंतपुरम या एर्नाकुलम जैसे इलाकों में मत की खेती करने लायक, इसलिए शशिधरन का फैसला विवादास्पद होने के बावजूद सही लगता है।